व्यक्तिवाद - INDIVIDUALISM

Introduction:- राज्य के कार्यक्षेत्र - संबंधी सिद्धांत में व्यक्तिवाद का महत्वपूर्ण स्थान है। व्यक्तिवादी सिद्धांतों के अनुसार "राज्य एक अनिवार्य अभिशाप है वे चाहते हैं कि राज्य का कार्यक्षेत्र कम से कम हो और व्यक्ति को अधिकतम स्वतंत्रता प्राप्त हो। व्यक्तिवाद का यदि हम oxford dictionary में अर्थ देखते हैं तो स्पष्ट होता है कि वैसा कार्य The idia that each person should think & act indipendently rather than depending on others. फ्रीमैन (Freeman) के अनुसार "सबसे अच्छी सरकार वह है जो सबसे कम शासन करती हो"

जे० एस० मिल - अत्यधिक शासन व्यक्ति की शारीरिक और मानसिक शक्तियों का पूरा विकास नहीं होने देता, क्योंकि उसके चलते व्यक्ति अपनी इच्छा और विवेक के अनुसार कार्य नहीं कर सकता, 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में में व्यक्ति का प्रभाव घटने लगा। व्यक्ति के विरुद्ध उस समय तक प्रतिक्रिया पूर्णतः प्रकट हो गई थी। C E M JOAD ने लिखा है, "व्यक्तिवाद या इसकी स्वतंत्रता के सिद्धांत को, जो राजनीति में बहुत मूल्यवान है, जब आर्थिक क्षेत्र में लगाया गया तो अत्यधिक विनाशकारी सिद्ध हुआ। इस सिद्धांत के ह्रास का कारण उसका भ्रामक सिद्धांतों पर आधारित होना था। ये भ्रामक सिद्धांत निम्नलिखित तीन थे-

① हर व्यक्ति समान रूप से दूरदर्शी है।

② हर व्यक्ति में इच्छित वस्तु प्राप्त करने की शक्ति है और उसे चयन की स्वतंत्रता है ③ प्रत्येक व्यक्ति की इच्छाओं की संतुष्टि और सम्पूर्ण समाज के कल्याण में समरूपता है।

व्यक्तिवाद का विकास – ऐतिहासिक दृष्टि से व्यक्तिवादी विचारधारा 19वीं शताब्दी की देन है, यद्यपि इसके पूर्ण-विकसित रूप की दृष्टि से इसे 19वीं शताब्दी की विचारधारा भी कहा जा सकता है। इस सिद्धांत की मान्यता है कि विश्व इतिहास में 18वीं शताब्दी का अपना एक विशेष स्थान है। यदि हम अतिप्राचीन काल के पृष्ठों को उलटें तो सोफिस्ट व्यक्ति का स्वभावतः स्वार्थी और असमाजिक मानते थे, जिसके ऊपर राज्य का अंकुश आवश्यक है ग्रीक लोग राज्य को एक नैतिक पुरुष भी मानते थे और कहते थे कि व्यक्ति राज्य का अभिन्न अंग है। उनकी मान्यता थी की राज्य जो भी करता है वह व्यक्ति के भलाई के लिए करता है। परोक्ष रूप में औद्योगिक क्रांति ने व्यक्ति की स्वतंत्रता और राज्य की अहस्तक्षेप-नीति का समर्थन किया

Scanned with Cam

जान स्टुवर्ट मिल (J.S. Mill) एडम स्मिथ, हर्बर्ट स्पेन्सर जैसे विचारकों का समर्थन पाकर यही विचारधारा व्यक्तिवादी विचारधारा के नाम से जानी गई

Explanation of Individualism - व्यक्तिवादी की व्याख्या- Individualism के अनुसार व्यक्ति साध्य है और राज्य साधन, परन्तु कोई श्रेष्ठ साधन नहीं है। राज्य एक आवश्यक बुराई है। व्यक्तिवादी सिद्धांत के अनुसार समाज व्यक्तियों का समूह है और व्यक्तियों के बिना समाज का अस्तित्व पूर्णतः निराधार है। समाज का निर्माण व्यक्तियों ने अपने अधिकारों के पूर्ण उपभोग के उद्देश्य से किया है, अर्थात समाज व्यक्ति से उच्च नहीं है। समाज साधन मात्र है और व्यक्ति साध्य। इसलिए राज्य का कर्तव्य है कि व्यक्ति के जीवन में न्यूनतम हस्तक्षेप करे।

व्यक्तिवादी सिद्धांत 'छोड़ो मत' सिद्धांत पर आधारित है। लेसेज-फेयर फ्रेंच भाषा का शब्द है जिसका अर्थ 'अकेले रहने दो' होता है अर्थात व्यक्ति ही अपने हित की बात अच्छी तरह समझ सकता है इसलिए व्यक्ति को अपने हित के कार्यों में पूर्ण स्वतंत्रता होनी चाहिए और राज्य को उसके कार्यों में न्यूनतम हस्तक्षेप करना चाहिए। बाहन के विचारानुसार राज्य के काम केवल पुलिस-राज्य का काम होना चाहिए Humbold के अनुसार 'राज्य को नागरिकों के कल्याण की समस्त चिन्ताओं से दूर रहना चाहिए। आधुनिक व्यक्तिवाद सिद्धांत का प्रतिपादन यूरोप में 18वीं शताब्दी के अन्तिम चरण में औद्योगिक क्रांति के बाद हुआ। बेन्थम जान स्टुवर्ट मिल, हरबर्ट स्पेंसर तथा एडम स्मिथ इसके प्रमुख समर्थक बने। Basis of Individualism व्यक्तिवादी सिद्धांत के आधार मुख्यतः पाँच धारणाओं पर आधारित है जो निम्न प्रकार है।

1- नैतिक आधार Ethical basis – जे० एस० मिल, काण्ट हमबोल्ट तथा ह्यूम ने नैतिक आधार पर व्यक्तिवाद का प्रतिपादन किया है और बताया है कि व्यक्ति अपने जीवन का लक्ष्य तभी प्राप्त कर सकता है जब राज्य का नियन्त्रण हस्तक्षेप हो इन लोगों का कहना है कि प्रत्येक व्यक्ति का अपना अलग व्यक्तित्व होता है। अतएव राज्य का कर्तव्य है कि वह प्रत्येक व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व के विकास का पूर्ण अवसर प्रदान करे।

2- आर्थिक आधार- एडम स्मिथ ने Economic basis पर व्यक्तिवाद का समर्थन किया है उसने बतलाया है कि स्वतंत्रता के वातावरण में ही आर्थिक प्रगति संभव है। स्वतंत्र प्रतियोगिता के वातावरण में ही व्यापार और उपनिवेश

Scanned with Cam

विकसित होते हैं इनके विचारानुसार आर्थिक क्षेत्र में भी कुछ प्राकृतिक नियम कार्य करते रहते हैं। वस्तुओं का मूल्य मांग तथा पूर्ति के नियम के अनुसार निश्चित होता है मनुष्य स्वयं अपना आर्थिक स्वार्थ समझता है, इसलिए राज्य को मनुष्य के आर्थिक क्षेत्र में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए

3- Experimental basis - व्यक्तिवादियों ने इतिहास द्वारा प्राप्त अनुभव और प्रयोग के आधार पर ही सिद्धांत का समर्थन किया है। इनका कहना है कि राज्य समाज कल्याण के लिए उपयोगी नहीं हो सकता अपने हितों के संबंध में सर्वोत्तम निर्णय मनुष्य ही कर सकता है। इसके अलावा, राज्य सभी कार्यों का संचालन सफलतापूर्वक नहीं कर सकता। जिस प्रकार मनुष्य के शरीर में lungs फेफड़ा अमाशय का काम नहीं कर सकता उसी प्रकार राज्य व्यापार-संयोजन तथा उद्योग-प्रबन्धक का कार्य नहीं कर सकता। राज्य एक राजनीतिक संगठन है इसलिए व्यवसाय का प्रबन्ध उचित रूप से करने में वह सर्वथा अयोग्य है इन तथ्यों की जानकारी राजनीतिक घटनाओं में हो रहे प्रयोगों से होती है।

4- Scientific basis - वैज्ञानिक आधार पर व्यक्तिवाद का समर्थन हरबर्ट स्पेन्सर ने किया है उसके अनुसार विज्ञान का यह सर्वमान्य सिद्धांत है कि जीवन के हर क्षेत्र में संघर्ष होता रहता है जिसमें शक्तिशाली जीवित रहते हैं और कमज़ोर तथा दुर्बलों का नाश हो जाता है। - जंगल में दुर्बल पेड़ निष्प्राण होकर सूख जाता है और मज़बूत तथा शक्तिशाली पेड़ फैलते रहते हैं। इसलिए योग्य व्यक्ति ऐन-केन-प्रकारेन समाज में वर्चस्व कायम कर लेता है। सरकार के कार्यक्षेत्र को सिमित करते हुए स्पेनसर कहता है "सरकार को गरीबों और रद्दे मकानों को अकेले छोड़ देना चाहिए जिससे दुर्बल वर्ग शीघ्र नष्ट हो जाए इससे अयोग्य तथा बेकार मनुष्यों का नाश होगा और एक बलवान, शक्तिशाली और प्रगतिशील राष्ट्र की स्थापना होगी।

5- Experience basis - व्यक्तिवादियों ने इतिहास द्वारा प्राप्त अनुभव के आधार पर ही इस सिद्धांत का समर्थन करते हुए कहा है कि जब कभी राज्य ने सामाजिक या आर्थिक जीवन को नियंत्रित और नियमित करने का प्रयत्न किया है, वह अपने प्रयत्नों में बुरी तरह असफल रहा। राज्य की सहायता, निषेध एवं संरक्षण विनाशकारी ही सिद्ध हुए। England में नौ-परिवहन एवं अन्य कानून और मास्त में राशनिंग-व्यवस्था इस असफलता के ज्वलंत उदाहरण है। बर्क का कहना है "शासनाधिकारी यह भूल करते आए हैं, क्योंकि उन्हें विश्वास था कि उनके हस्तक्षेप के बिना कोई व्यापार समृद्ध नहीं हो सकता।

Scanned with Cam

:5:

व्यक्तिवाद की आलोचनाएँ - Criticism of Individualism

1. वर्ग-विभाजन के लिए जिम्मेवार - व्यक्तिवाद, चूँकि पूँजीवाद के प्रारम्भिक काल की उपज है, यह वर्ग विभाजन को प्रोत्साहित करता है इसने मानव को मानव द्वारा शोषण सिखाया और पूँजीपतियों द्वारा गरीबों पर किए गए अत्याचारों का समर्थन। विश्व में दमन तथा अत्याचार को बढ़ाया।

2- भ्रांत धारणा पर आधारित है कि राज्य साधन है और व्यक्ति साध्य तथा दोनों का अलग-अलग अस्तित्व है।

3- राज्य को अनिवार्य अभिशाप मानना गलत बल्कि यह तो जीवन को सुखी बनाने के लिए है।

4- राज्य के उद्देश्यों का उचित स्पष्टीकरण नहीं करते

5- आधारहीन तर्क पर आधारित है अनुभव बताता है कि समाज के सभी मनुष्य समान रूप से बुद्धिमान नहीं होते

6- स्वतंत्रता का उचित अर्थ नहीं

7- विकास का मनमाना अर्थ- 8- आर्थिक दृष्टि से गलत

9- संकटकाल के समय अनुपयोगी 10- प्रकृति का गलत चित्रण

11- नैतिक दृष्टि से गलत 12- हिंसा को प्रोत्साहन देता है और गरीबों को समाप्त करने का षड्यंत्र करता है।

निष्कर्ष के तौर पर उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि व्यक्तिवाद में अनेक दोष हैं क्योंकि यह राज्य को अनावश्यक घोषित करके समाज विरोधी कार्य करता है। यदि हम Individualism को स्वीकार करते हैं तो समाज में शांति नहीं रह सकती। इसलिए लास्की ने कहा है, "व्यक्तिवाद का परिणाम होगा - कमज़ोर स्वास्थ्य, कमज़ोर बुद्धि, दरिद्र घर और अधिकांश जनता के लिए अप्रिय कार्य" ऐसी स्थिति में हम Individualism व्यक्तिवाद का समर्थन नहीं कर सकते।-

Scanned with Cam